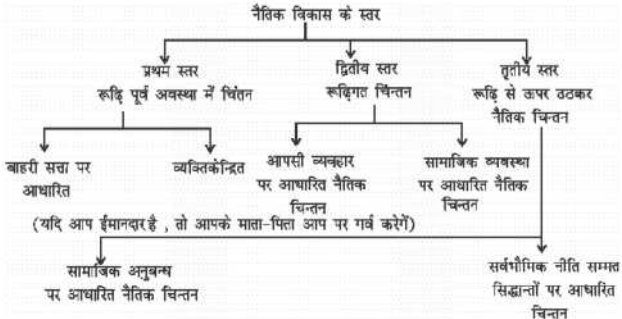


61. (d) चढ़ना, फूदकना व दौड़ना गतिक कौशल में आता है, जबकि लिखना सूक्ष्म गतिक में क्योंकि यहाँ सिर्फ हाथ में हल्की-सी गति होती है।
73. (c) सामाजिक विकास वातावरण से सम्बन्धित होता है।
112. (d) व्यक्तिगत मतवैषम्य व्यक्ति विशेष के अन्तर को प्रदर्शित करता है। अतः सीखने वालों के व्यक्तिगत मतमतेों के संदर्भ में एक शिक्षक को अधिगम परिस्थिति-उपलब्ध करानी चाहिए।
113. (c) विकास जीवन पर्यंत जारी रहता है। लेकिन विकास के प्रत्येक क्षेत्र के विकास की गति समान नहीं होती। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति का शारीरिक विकास पहले होता है लेकिन उसका बोधात्मक विकास बाद में होता है।
114. (d) वाइगोत्स्की की मानवीय समझ की सामाजिक सांस्कृतिक पद्धति सीखने को समाज या संस्कृति में मानव बुद्धिमत्ता में उद्भव के रूप में वर्णन करती है। वाइगोत्स्की का सिद्धान्त यह कहता है कि ज्ञान के विकास में सामाजिक सक्रियता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
115. (d) उत्सुकता एक ऐसा गुण है जो जिज्ञासु सोच जैसे कि अन्वेषण, जाँच, सीखना मानवीय एवं पशु प्रजातियों के द्वारा प्रमाणीकरण इत्यादि को प्रदर्शित करता है। मानवीय विकास के सभी क्षेत्रों से उत्सुकता जुड़ी रहती है। इनमें सीखने की प्रक्रिया एवं ज्ञान तथा दक्षता प्राप्त करने की इच्छा सम्मिलित रहती है।
116. (b) 'अधिगम शैली से तात्पर्य है कि प्रत्येक छात्र अलग प्रकार से सीखता है। तकनीकी रूप से किसी व्यक्ति के सीखने का तरीका प्राथमिकता वाले रास्ते को प्रदर्शित करता है जिसमें छात्र सूचना को अवशोषित करता, प्रक्रिया में लाता, पूरी तरह से समझ लेता एवं बनाता रहता है।
117. (a) प्रकृति विरुद्ध पोषण वाद-विवाद, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक वाद-विवाद है। मानवीय संस्कृति, व्यवहार एवं व्यक्तित्व प्राथमिक रूप से प्रकृति द्वारा पोषित होते हैं या पोषण के द्वारा इस वाद-विवाद में प्रकृति को वंशानुगत या हार्मोन आधारित व्यवहार के रूप में जाना जाता है। जबकि पोषण अधिकांशतया पर्यावरण एवं अनुभव के रूप में जाना जाता है।
118. (a) एक शिशु मानव का एक बहुत छोटा बालक होता है। 1 माह से लेकर 12 माह के बच्चे तक के लिए शब्द 'शिशु' का प्रयोग किया जाता है। फिर भी यह परिभाषा जन्म एवं 1 वर्ष की उम्र या जन्म एवं 2 वर्ष की उम्र के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।
119. (a) मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे के अनुसार बच्चे बोधात्मक विकास की चार चरम स्थितियों में उन्नति करते हैं। प्रत्येक स्थिति इस तथ्य पर आधारित होती है कि बच्चे दुनिया को कैसे समझते हैं। बच्चों की पद्धति द्वारा पियाजे ने बौद्धिक विकास की एक पद्धति का विकास किया, जिसकी चार अलग-अलग स्थितियाँ हैं:
- जन्म से लेकर 2 वर्ष तक, संवेदिक पेशीय अवस्था
 - 2 वर्ष की उम्र से 7 वर्ष की उम्र तक, पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
 - 7 वर्ष की उम्र से 11 वर्ष की उम्र तक, मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था
 - अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था, जो कि यौवनारंभ में प्रारंभ होती है एवं वयस्कता में संचालित होती है।
120. (d) इस सिद्धांत के अनुसार बालक पहले सामान्य बातों को और बाद में उन सभी सामान्य बातों को मिलाकर एक विशिष्ट सिद्धांत बनाना सीखता है। जैसे बच्चा पहले व्यक्ति का नाम, स्थान और वस्तु का नाम जानता है और बाद में जानता है कि किसी व्यक्ति वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं इस प्रकार बालक का विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है।

122. (d) पियाजे के अनुसार पौर्षों और पशुओं की तरह मनुष्य भी अपने भौतिक और सामाजिक वातावरण के साथ, जिसमें वे रहते हैं, अपने को अनुकूलित करते हैं। पियाजे ने अनुकूलन को दो मूल प्रक्रियाओं - समावेशन और समायोजन के रूप में लिया है।
124. (d) कोई अवधारणा समझ एवं ज्ञान से संबंधित मानसिक एवं शारीरिक क्रियाकलापों को प्रदर्शित करती है। पियाजे के नियम के अनुसार अवधारणा के अंतर्गत ज्ञान की श्रेणी एवं उस ज्ञान को प्राप्त करने की प्रक्रिया सम्मिलित है। जैसे-जैसे अनुभव होते जाते हैं। विद्यमान अवधारणा में संशोधन करने, संयुक्त करने या परिवर्तन करने के लिए इस सूचना का प्रयोग किया जाता है।
125. (a) आत्म संभाषण एक ऐसा संभाषण है जो वार्तालाप, आत्म दिग्दर्शन एवं व्यवहार की निरंतरता के लिए आवश्यक होता है। दो वर्ष से लेकर सात वर्ष तक के बच्चे आत्म संभाषण में संलग्न देखे जा सकते हैं। आत्म संभाषण का अध्ययन सर्वप्रथम लेव वायगोत्सकी के द्वारा किया गया। अनुसंधानकर्ताओं ने बच्चों के आत्म संभाषण के प्रयोग एवं उनके कार्य प्रदर्शन एवं उपलब्धियों के मध्य एक सकारात्मक अन्तर्संबंध पाया है।
127. (c) संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएँ होती हैं। इसकी अंतिम अवस्था औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था कहलाती है। यह अवस्था 12 वर्ष की आयु के होने पर उपस्थित रहती है तथा प्रौढ़ावस्था प्राप्त करने तक जारी रहती है। इस अवस्था में कोई व्यक्ति किसी स्थिति का आलोचनात्मक विश्लेषण करना सीखता है। इस अवस्था में विचारों को अमूर्त रूप में व्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है।
128. (b) कोहलबर्ग की दिवसीय स्तर की औपचारिक नैतिकता के अंतर्गत व्यक्ति एक समाज की औपचारिकताओं/नियमों के अंतर्गत जीवन निर्वाह करता है। लॉरेन्स कोहलबर्ग के अनुसार "अच्छा व्यवहार वह व्यवहार है जो दूसरों को प्रसन्न करता है, दूसरों की मदद करता है एवं उनके द्वारा स्वीकृत होता है। यह बहुमत एवं प्राकृतिक व्यवहार के परंपरागत प्रतीक में काफी अनुरूप होता है। अकसर व्यवहार की जाँच विचारधारा से की जाती है। प्रथम बार "उसका अर्थ अच्छा" ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। एक व्यक्ति 'अच्छा' होने से स्वीकृति प्राप्त करता है।
129. (a) अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अंतर्संबंधित हैं।
130. (c) विकास जीवविज्ञान एवं अनुभवों के बीच एक नियत एवं गतिशील अंतःक्रिया है। यह संस्कृति के द्वारा प्रभावित होता है। यह सिर्फ संस्कृति द्वारा शासित एवं निर्धारित नहीं होता है।
131. (d) भाषा विकास के लिए प्रारम्भिक बचपन अतिसंवेदनशील काल है क्योंकि बच्चा अपने परिवार से ही सीखना प्रारंभ कर देता है। बच्चे पर उसके पर्यावरण में होने वाली प्रत्येक गतिविधि का गहरा प्रभाव पड़ता है।
132. (a) पियाजे के विचार में बच्चे सक्रिय ज्ञान-निर्माता तथा नहं वैज्ञानिक हैं, जो संसार के बारे में अपने सिद्धांतों की रचना करते हैं। जबकि स्किनर, पैवलोव तथा युंग के विचार इससे भिन्न हैं।
134. (c) विकास के लिए उचित कथन है- सामाजिक-संस्कृतिक संदर्भ, विकास में एक महत्वपूर्ण-भूमिका का निर्वाह करता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः उसके विकास में समाज तथा संस्कृति का अभिन्न प्रभाव पड़ता है।
135. (d) वंशानुक्रम और वातावरण के बीच अन्योन्याक्रिय के कारण व्यक्तियों में एक-दूसरे से भिन्नता होती है। बच्चे की वृद्धि और विकास वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का संयुक्त परिणाम होता है।

136. (b) मूर्त सक्रियात्मक बच्चा संधारण एवं कारीकरण करने योग्य होता है। जब बच्चा किसी भी विचार या वस्तु को समझकर पहचान कर उसे वर्गीकृत करने में सक्षम होता है वह मूर्त सक्रियात्मक अवस्था है।
137. (d) एक बच्ची कहती है, "धूप में कपड़े जल्दी सूख जाते हैं।" वह कार्य-कारण की समझ को प्रदर्शित कर रही है। वह बच्ची कार्य करने की प्रक्रिया, विधि एवं स्थिति का समझती भीति समझती है।
138. (d) पियाजे के अनुसार, बच्चों का चिंतन व्यक्तियों से प्रकार में भिन्न होता है बजाय मात्रा के। पियाजे ने चिंतन में मानसिक शक्तियों को महत्ता दी है। उन्होंने विकास को तीन आयाम बताए हैं। बच्चा अपने वातावरण में अपनी मानासिक शक्तियों का विकास करता है जो व्यक्तियों से भिन्न होती है।
139. (b) अनुबोधन और संकेत देना तथा नाजुक स्थितियों पर प्रश्न पूछना आधारभूत सहायता का उदाहरण है। यदि किसी बच्चे को किसी परिस्थिति विभिन्न प्रकार के संकेत दिये जा रहे हो या आवश्यकतानुसार अनुबोधन दिए गए हो तो उसकी आधारभूत सहायता की जा रही है।
140. (b) वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चे व्यक्तियों और समव्यक्तियों के साथ परस्पर क्रिया से सीखते हैं। वाइगोत्सकी को मानना है बच्चे पारस्परिक क्रिया में होने वाले विभिन्न अनुभवों से सीखता है।
141. (a) कोलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धान्त को अवस्था सिद्धान्त भी कहा गया है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण नैतिक विकास को छः अवस्थाओं में विभाजित किया है और इन्हें सार्वभौमिक माना है।
143. (d) वैज्ञानिक अध्ययन यह सिद्ध करते हैं कि विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में विभिन्नता होती है, एक ही आयु के दो बालकों में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में वैयक्तिक विभिन्नतायें स्पष्ट दिखाई देती हैं।
144. (a) मध्य बचपन अवधि सामान्यतः 6-8 वर्ष तक होती है।
146. (b) ऐसी कोई क्रिया जो अनुक्रिया की संख्या में वृद्धि करती है पुनर्बलन कहलाती है। पुनर्बलन नकारात्मक या सकारात्मक हो सकता है।
147. (b) पियाजे के अनुसार बच्चे के खोजपूर्ण व्यवहार से लेकर अमूर्त, तर्कसंगत विचार निर्माण तक की यात्रा में सभी बच्चे चार अवस्थाओं से गुजरते हैं:-
- (क) संवेदी पेशीय अवस्था
- (ख) पूर्व सक्रियात्मक अवस्था
- (ग) मूर्त सक्रियात्मक अवस्था
- (घ) अमूर्त सक्रियात्मक अवस्था
- पूर्व सक्रियात्मक अवस्था अवधि के अंत तक बच्चे मानसिक सक्रियाएं करना प्रारंभ करते हैं। मानसिक से सक्रिया से अभिप्राय है कि सोच के साथ क्रियाएं करना एवं मन-मस्तिष्क में समस्या को हल करने का प्रयास करना।
149. (a) वाइगोत्सकी के अनुसार भाषा संज्ञातात्मक विकास का महत्वपूर्ण औजार है। उनके अनुसार आरंभिक बाल्यकाल में ही बच्चा अपने कार्यों को नियोजन की तरह उपयोग करने लग जाता है।
150. (c) वाइगोत्सकी अपने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के लिए जाने जाते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक अन्तः क्रिया ही बालक की सोच व व्यवहार में निरंतर बदलाव लाता है। उनके अनुसार किसी बालक का अधिगम उसके अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तर्सम्बन्धों पर निर्भर करता है।

152. (a) लेव सिमनोविच वाइगोत्सकी का सामाजिक दृष्टिकोण संज्ञात्मक विकास का एक प्रगतिशील विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वाइगोत्सकी के सिद्धान्तानुसार अधिगम व विकास सांस्कृतिक व सामाजिक वातावरण की मध्यस्थता के साथ चलते हैं। इनका सिद्धान्त सामाजिक निर्मितवाद है। वाइगोत्सकी के इन शब्दों से यह और भी अधिक स्पष्ट होता है- "हमारे स्वयं का विकास दूसरों के द्वारा होता है। अतः एक शिक्षक होने के नाते बच्चों के आकलन के लिए सहयोगी विधि को वरीयता देंगे।"
154. (c) संप्रत्यय का अर्थ होता है- देखना, अवबोधन करना, समझना, अंतर्निहित करना अथवा जानना।
155. (c) शिरः पदाभिमुख दिशा सिद्धान्त से अभिप्राय है कि विकास सिर से पैर की ओर होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार बच्चे का पहले सिर पर नियन्त्रण होता है; तत्पश्चात् हाथों और पैरों पर।
156. (d) भाषा अभिव्यक्ति का ऐसा समर्थ साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार जान सकता है। प्रारम्भिक बचपन का समय में भस्तिष्क की सतर्कता, ज्ञानेन्द्रियों की तेजी, सीखने और समझने की अधिकता अपने चरमोत्कर्ष पर होती है।
157. (a) एक व्यक्ति की आनुवांशिकता में वह सब शारीरिक बनावटें, शारीरिक विशेषताएँ, क्रियाएँ सम्मिलित रहती हैं, जिनको वह अपने माता-पिता, अपने पूर्वजों या प्रजाति से प्राप्त करता है। पर्यावरण में वे समस्त बाह्य तत्व आ जाते हैं जिन्होंने जीवन प्रारंभ करने के समय से व्यक्ति को प्रभावित किया है। बालक के संपूर्ण व्यवहार की सृष्टि, वंशानुक्रम और वातावरण की अंतः क्रिया द्वारा होती है।
158. (b) लेव वाइगोत्सकी के अनुसार, संज्ञात्मक विकास एकाकी नहीं हो सकता, यह भाषा विकास, सामाजिक विकास, यहाँ तक कि शारीरिक विकास के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ में होता है।
159. (c) कोलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास कुछ अवस्थाओं में होता है। ये अवस्थाएँ सार्वभौमिक होती हैं। कोलबर्ग अवस्था मॉडल नैतिक विकास के तीन स्तरों का वर्णन करता है और प्रत्येक की दो-दो अवस्थाओं पर प्रकाश डालता है।



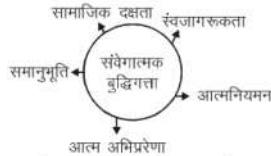
160. (a) जीन पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञात्मक विकास सिद्धान्त मानव बुद्धि की प्रकृति एवं उसके विकास से सम्बन्धित एक विशद सिद्धान्त है। पियाजे के अनुसार बच्चा अपने वातावरण के साथ अन्तःक्रिया के परिणामस्वरूप ही सीखता है।

161. (d) पियाजे ने अनुकूलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को दो उप-प्रक्रियाओं में बाँटा है- समावेशन और समायोजन। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालक किसी समस्या का समाधान करने के लिए पहले सीखी हुयी मानसिक प्रक्रियाओं का सहारा लेता है। जब पूर्व में सीखी मानसिक प्रक्रियाओं से काम नहीं होता तब नयी प्रक्रियाओं का निर्माण ही समावेशन है।
162. (b) पियाजे के अनुसार, बच्चों के विचार और वातावरण सामान्यतः अहंकेन्द्रित होते हैं। किसी स्थिति को अन्य व्यक्ति को दृष्टिकोण से देखने के लिए बच्चे की असमर्थता ही अहंकेन्द्रित भाषा कहलाती है। वाइगोत्सकी निजी भाषण को परिभाषित करने वाले पहले मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने निजी भाषण को सामाजिक और आंतरिक भाषण के बीच संक्रमण बिन्दु में माना है। निजी-भाषण में दूसरे से वातावरण के बजाय स्वयं को संबोधित किया जाता है।
164. (a) विकास केवल परिमाणात्मक प्रक्रिया नहीं है, अपितु यह एक गुणात्मक प्रक्रिया है, जिसको ठीक-ठीक मापन नहीं किया जा सकता। वैयक्तिक विभिन्नता इसका प्रमुख कारण है।
165. (c) वंशानुक्रम तथा वातावरण एक दूसरे के पूरक हैं ये दोनों मिलकर व्यक्ति के विकास के मार्ग को प्रशस्त करते हैं।



166. (d) पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञातात्मक विकास सिद्धान्त मानव बुद्धि की प्रकृति व उसके विकास से सम्बन्धित एक विशद सिद्धान्त है। पियाजे के संज्ञातात्मक सिद्धान्त को विकासवात्मक सिद्धान्त भी कहा जाता है। उसके अनुसार, बालक के भीतरी संज्ञान का विकास अनेक अवस्थाओं से होकर गुजरता है इसलिए इसे अवस्था सिद्धान्त भी कहा जाता है।
167. (c) संरक्षण से अभिप्राय वातावरण में परिवर्तन तथा स्थिरता को पहचानने व समझने की क्षमता से है। किसी वस्तु के रूप-रंग में परिवर्तन को उस वस्तु के तत्त्व में परिवर्तन से अलग करने की क्षमता से है।
169. (a) गिलीगन के अनुसार कोलबर्ग ने अपने नैतिक तर्क के अध्ययन को मूलतः पुरुषों के नमूनों पर आधृत रखा है। कोलबर्ग ने महिलाओं की चिन्ताओं का वर्णन नहीं किया है।
170. (c) वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चे भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक संश्लेषण अपितु स्व-निर्देशित तरीके से कार्य करने के लिए, अपने व्यवहार हेतु योजना बनाने, निर्देश देने व मूल्यांकित करने में भी करते हैं। पियाजे ने भाषा को आत्म-केन्द्रित तथा अपरिपक्व माना है, परन्तु वाइगोत्सकी के अनुसार आरंभिक बाल्यावस्था में यह बालक के विचारों का एक महत्वपूर्ण साधन है।
171. (c) 'लिंग' सामाजिक-सांस्कृतिक शब्द है, सामाजिक परिभाषा में सम्बन्धित करते हुए समाज में 'पुरुषों' और 'महिलाओं' के कार्यों और व्यवहारों को परिभाषित करता है।
172. (a)
- समीप-दूराभिमुख दिशा सिद्धान्त के अनुसार विकास मध्य से बाहर की ओर एवं केन्द्र से सिरों की ओर होता है।

- शिरः पदाभिमुख दिशा सिद्धान्त के अनुसार बालक का विकास सिर से पैर की ओर होता है।
 - अंतर्गव्यक्तिक भिन्नता सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक बालक का विकास का स्वयं का स्वरूप होता है। इस स्वरूप में वैयक्तिक विभिन्नता पाई जाती है।
 - अंतराव्यक्तिक भिन्नता सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक बालक में विकास की दर विकास के एक क्षेत्र को अपेक्षा दूसरी में भिन्न हो सकती है।
174. (b) मानव व्यक्तित्व अनुवर्षिकता और यातावरण की अंतः क्रिया का परिणाम होता है।
- अनुवर्षिक गुणों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होने की प्रक्रिया को अनुवर्षिकता कहा जाता है
 - पर्यावरण में वे समस्त बाह्य तत्व आते हैं जो बालक को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।
179. (d) जीन पियाजे ने बालक के संज्ञात्मक विकास के संदर्भ में शिक्षा मनोविज्ञान में क्रान्तिकारी संकल्पना को उद्घाटित किया है। पियाजे ने संज्ञात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभाजित किया है—
- (1) संवेदिक पेशीय अवस्था : जन्म के 2 वर्ष
 - (2) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था : 2 से 7 वर्ष
 - (3) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था : 7 से 11 वर्ष
 - (4) अमूर्त-संक्रियात्मक अवस्था : 11 से 18 वर्ष
183. (c) सिग्मण्ड फ्रायड का मानना है कि व्यक्तित्व मुख्य तीन घटतियों इडम् अहम् एवं पराहम् द्वारा मिलकर बना होता है। पराहम् (सुपर-इगो) व्यक्ति की समाजीकरण की प्रक्रिया का मुख्य स्रोत है। यह आदर्शवादी या नैतिकता के सिद्धान्त पर आधारित है।
184. (b) गुणसूत्र या क्रोमोजोम सभी प्राणियों की कोशिकाओं में पाये जाने वाले रंतु रूपी पिंड होते हैं, जो कि सभी आनुवंशिक गुणों को निर्धारित व संचारित करते हैं। मानव कोशिका में गुणसूत्रों की संख्या 46 होती है जो 23 के जोड़े में होते हैं।
185. (b) संवेगात्मक बुद्धि का तात्पर्य मुख्य रूप से व्यक्ति के सांवेगिक पक्ष से संबन्धित क्षमताओं एवं शीलगुणों के समुच्चय से है। संवेगात्मक बुद्धि के सिद्धान्त का प्रतिपादन डेनियल गोलमैन ने किया। गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धिगता को 5 योग्यताओं का समूह माना है—



186. (a) अनुकूलित प्रत्यवर्तन का सिद्धान्त अधिगम का सिद्धान्त है।
188. (a) जर्मन मनोवैज्ञानिक फ्रेडरिच ने शारीरिक रचना के प्रकारों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया। उन्होंने व्यक्तियों को चार भागों में वर्गीकृत किया।
189. (c) कार्ल गुस्टाफ युंग रिचर्ड जेनरल के मनोवैज्ञानिक तथा मनश्चिकित्सक थे। उन्होंने वैश्लेषिक मनोविज्ञान की नींव डाली।
192. (c) पूर्व किशोरावस्था में बालक में अपने माता-पिता और परिवार से संबंध अथवा मतभेद करने की प्रवृत्ति आ जाता है।

अभ्यास - 2

1. "शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक समरस व प्रगतिशील विकास है" यह कथन है-
 - (a) प्लेटो (b) रूसो
 - (c) अरस्तू (d) पेस्टालोजी
2. मानव अभिवृद्धि से तात्पर्य है-
 - (a) मानव शरीर का आकार, भार व कार्य-शक्तियों में वृद्धि।
 - (b) मानव का ज्ञान बढ़ना।
 - (c) व्यक्तित्व का विकास होना।
 - (d) आध्यात्मिक विकास होना।
3. मानव की अभिवृद्धि एक निश्चित आयु तक होती है। यह मानी जाती है-
 - (a) 10 वर्ष तक (b) 18 वर्ष तक
 - (c) 40 वर्ष तक (d) 60 वर्ष तक।
4. "अभिवृद्धि से तात्पर्य कोशिकाओं से होने वाली वृद्धि से है" यह कथन है-
 - (a) हरलॉक (b) फ्रैंक
 - (c) फ्रायड (d) स्किनर।
5. मानव विकास के प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं-
 - (a) वंशानुक्रम
 - (b) पर्यावरण
 - (c) वंशानुक्रम व पर्यावरण
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
6. शिक्षा की दृष्टि से मानव विकास का निम्न पक्ष सबसे अधिक महत्वपूर्ण है-
 - (a) शारीरिक (b) मानसिक
 - (c) सामाजिक (d) संवेगात्मक।
7. रॉस ने मानव विकास को बांटा है-
 - (a) 2 भागों में (b) 4 भागों में
 - (c) 6 भागों में (d) 10 भागों में।
8. रॉस के अनुसार शैशवावस्था मानी जाती है-
 - (a) 1 से 3 वर्ष (b) 1 से 5 वर्ष
 - (c) 1 से 4 वर्ष (d) 1 से 6 वर्ष।
9. अधिकांश विद्वानों के अनुसार बाल्यावस्था की अवधि है-
 - (a) 5 से 10 (b) 6 से 12
 - (c) 4 से 10 (d) 2 से 8
10. शिक्षा की दृष्टि से मानव विकास की कौन-सी अवस्थाएँ महत्वपूर्ण हैं-
 - (a) शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था
 - (b) बाल्यावस्था, किशोरावस्था, वयस्कावस्था
 - (c) सिर्फ किशोरावस्था
 - (d) इनमें से कोई नहीं।
11. "प्रत्येक जाति चाहे वह पशु जाति हो या मानव जाति, अपनी जाति के अनुरूप विकास के प्रतिमान का अनुसरण करेगा।" यह कथन किस सिद्धान्त की ओर संकेत करता है-?
 - (a) विकास क्रम का सिद्धान्त
 - (b) विकास दिशा का सिद्धान्त
 - (c) निरंतर विकास का सिद्धान्त
 - (d) समान प्रतिमान का सिद्धान्त।
12. जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है-
 - (a) वृद्धि (b) विकास
 - (c) परिपक्वता (d) बुद्धि विकास।
13. बीसवीं शताब्दी को 'बालक की शताब्दी' किसने कहा है?
 - (a) वाटसन ने
 - (b) एलिजाबेथ ने
 - (c) क्रो एण्ड क्रो ने
 - (d) एना फ्रायड ने
14. यह अवस्था 'मानव जीवन की नाँव' कही जाती है-
 - (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
 - (c) किशोरावस्था (d) भ्रूणावस्था
15. शैशवावस्था की मुख्य विशेषताएँ हैं-
 - (a) शारीरिक विकास में तीव्रता
 - (b) दूसरों पर निर्भरता
 - (c) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति
 - (d) उपरोक्त सभी।
16. शैशवावस्था को 'सीखने का आदर्श काल' कहा है-
 - (a) फ्रैंक ने। (b) वैलेन्टाइन ने।
 - (c) फ्रायड ने। (d) हरलॉक ने।
17. शिशु में जन्म के समय पाया जाने वाला संवेग है-
 - (a) भय (b) क्रोध
 - (c) प्रेम (d) उत्तेजना।
18. इस अवस्था के प्रथम 6 वर्षों में बालक बाद के 12 वर्षों से अधिक सीख लेता है-
 - (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
 - (c) किशोरावस्था (d) इनमें से कोई नहीं।
19. शैशवावस्था में शिशु को निम्न प्रकार शिक्षा दी जानी चाहिए-
 - (a) आत्म-प्रदर्शन के अवसर दें
 - (b) चित्रों व कहानियों द्वारा शिक्षा
 - (c) विभिन्न अंगों की शिक्षा
 - (d) उपरोक्त सभी।

20. कॉल व ब्रूस ने बाल्यावस्था को माना है—
 (a) समस्यात्मक काल
 (b) अनीछा काल
 (c) मिथ्या परिपक्वता काल
 (d) जिज्ञासा काल।
21. बाल्यावस्था को 'मिथ्या परिपक्वता' काल कहा है—
 (a) रॉस ने (b) कॉल व ब्रूस ने
 (c) एना फ्रायड ने (d) क्रो एण्ड क्रो ने।
22. बाल्यावस्था में पायी जाने वाली प्रवृत्तियाँ हैं—
 (a) निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति
 (b) जिज्ञासा की प्रवृत्ति
 (c) रचनात्मक कार्यों में आनंद लेना
 (d) उपरोक्त सभी।
23. इस अवस्था को समूह अवस्था (gang age) या चुस्ती की अवस्था भी कहते हैं—
 (a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
 (c) प्रौढ़ावस्था (d) किशोरावस्था।
24. किशोरावस्था पर सबसे अधिक कार्य करने वाले मनोवैज्ञानिक हैं—
 (a) एना फ्रायड (b) स्टेनले हॉल
 (c) हॉलिंग वर्थ (d) किंग
25. स्टेनले हॉल ने इस अवस्था को बड़े संघर्ष, तनाव व तृप्तान की अवस्था कहा है—
 (a) गर्भावस्था (b) शैशवावस्था
 (c) बाल्यावस्था (d) किशोरावस्था।
26. किशोरावस्था कठिन काल कहा जाता है क्योंकि—
 (a) शारीरिक विकास में तीव्रता के कारण
 (b) मूल्यों, आदर्शों व संवेगों में संघर्ष के कारण
 (c) आवेगों व संवेगों में परिवर्तन के कारण
 (d) उपरोक्त सभी।
27. किशोरावस्था की मुख्य विशेषता है—
 (a) काम-शक्ति की परिपक्वता
 (b) स्वतंत्रता व विद्रोह की भावना
 (c) जीवन-दर्शन का निर्माण
 (d) उपरोक्त सभी।
28. किशोरावस्था के विकास के सिद्धान्त हैं—
 (a) त्वरित विकास का सिद्धान्त
 (b) क्रमशः विकास का सिद्धान्त
 (c) उपरोक्त दोनों
 (d) इनमें से कोई नहीं।
29. बुद्धि का अधिकतम विकास हुआ माना जाता है—
 (a) बाल्यावस्था में (b) किशोरावस्था में
 (c) शैशवावस्था में (d) जन्म से ही।
30. पितृ विरोधी व मातृ विरोधी ग्रन्थियाँ विकसित होती हैं—
 (a) शैशवावस्था में (b) बाल्यावस्था में
 (c) किशोरावस्था में (d) कभी नहीं।
31. शैशवावस्था में यौन इच्छाओं का अध्ययन करते हुए पितृ विरोधी व मातृ विरोधी ग्रन्थि के रहस्य का उद्घाटन किया है—
 (a) स्कनर ने (b) गैस्टालर ने
 (c) युंग ने (d) फ्रायड ने।
32. पितृ विरोधी ग्रन्थि में बालक—
 (a) माता से प्रेम करता है, पिता से घृणा
 (b) पिता से प्रेम करता है, माता से घृणा
 (c) माता-पिता, दोनों से प्रेम करता है
 (d) माता-पिता, दोनों से घृणा करता है
33. 'पितृ विरोधी ग्रन्थि' को जाना जाता है—
 (a) लिबिडो (b) नारसिस्म
 (c) इरोज (d) आडिपस कॉम्प्लेक्स
34. वंशानुक्रम व वातावरण का सम्बंध है—
 (a) वंशानुक्रम व वातावरण एक-दूसरे के विरोधी हैं
 (b) वंशानुक्रम महत्वपूर्ण है, वातावरण नहीं
 (c) जीवन वंशानुक्रम व वातावरण का योग
 (d) समस्त दोषों का कारण वातावरण है।
35. वंशानुक्रम से अभिप्राय है—
 (a) शक्तियाँ, दोष व गुण जो गर्भाधान के समय जीवकोष को मिलते हैं
 (b) वे क्षमताएँ जो बालक अपने पूर्वजों से प्राप्त करता है
 (c) इसमें शारीरिक व मानसिक शक्तियाँ आती हैं
 (d) उपरोक्त सभी।
36. वंश-परम्परा के मुख्य वाहक होते हैं—
 (a) गुण (b) निषेचन
 (c) पित्रैक (d) भ्रूण।
37. रुचियों, मूल प्रवृत्तियों एवं स्वाभाविक आवेगों का स्वस्थ विकास हो सकता है, यदि—
 (a) वंशानुक्रम स्वस्थ हो
 (b) बालक का स्वास्थ्य अच्छा हो
 (c) माता-पिता शिक्षित हो
 (d) वातावरण जिसमें रहता है, स्वस्थ होना चाहिए।
38. बालकों में वंशानुक्रम के कारण पाया जाता है—
 (a) शारीरिक विभिन्नता
 (b) शैक्षिक विभिन्नता
 (c) आचरण की विभिन्नता
 (d) सम्पन्नता की विभिन्नता।
39. "बालक निजीव को सजीव समझने लगता है" पियाजे के अनुसार यह दोष किस अवस्था का है?
 (a) संवेदी पेशीय अवस्था
 (b) पूर्व सँक्रियात्मक अवस्था
 (c) मूर्त सँक्रियात्मक अवस्था
 (d) औपचारिक सँक्रियात्मक अवस्था।

57. लारेंस कोह्लबर्ग के सिद्धान्त में बताये तीन स्तरों में से एक नहीं है-
 (a) पूर्व-रूढ़िगत नैतिकता स्तर
 (b) रूढ़िगत नैतिकता स्तर
 (c) उत्तर रूढ़िगत नैतिकता स्तर
 (d) सर्वोच्च नैतिकता स्तर।
58. रूढ़िगत नैतिकता स्तर है-
 (a) 1 से 4 वर्ष (b) 4 से 7 वर्ष
 (c) 10 से 13 वर्ष (d) 13 से 17 वर्ष
59. शैशवावस्था में संवयीकाल किसे कहते हैं?
 (a) जन्म से 3 वर्ष (b) 1 से 3 वर्ष
 (c) 2 से 5 वर्ष (d) 3 से 6 वर्ष
60. किशोरों की रुचि में स्थायित्व किस काल में आता है?
 (a) 12-14 (b) 13-15
 (c) 14-16 (d) 16-18
61. किशोरावस्था में निर्देशन की आवश्यकता किस क्षेत्र में होती है?
 (a) व्यक्तिगत (b) शैक्षिक
 (c) व्यावसायिक (d) ये सभी।
62. किशोरावस्था की सबसे नाजुक व संवेदनशील समस्या क्या होती है?
 (a) संवेग सम्बंधी (b) समायोजन सम्बंधी
 (c) व्यवसाय सम्बंधी (d) यौन सम्बंधी
63. शिक्षा की दृष्टि से मानव विकास का कौन-सा पक्ष सबसे अधिक महत्व का है?
 (a) शारीरिक (b) मानसिक
 (c) सामाजिक (d) संवेगात्मक
64. वंशानुक्रम के मूल वाहक क्या होते हैं?
 (a) शुक्राणु (b) डिम्बाणु
 (c) गुणसूत्र (d) पित्रैक
65. बालकों में समस्या समाधान योग्यता किस काल में विकसित होती है?
 (a) 4 से 6 (b) 6 से 8
 (c) 8 से 10 (d) 9 से 12
66. पितृभ्रष्ट बाल्यावस्था किसे कहते हैं?
 (a) 6 से 9 वर्ष (b) 7 से 10 वर्ष
 (c) 8 से 11 वर्ष (d) 9 से 12 वर्ष
67. बाल्यावस्था में कौन-सी मूल प्रवृत्ति सबसे अधिक क्रियाशील रहती है?
 (a) काम (b) जिज्ञासा
 (c) रचनात्मकता (d) सामूहिकता
68. शैशवावस्था की विशेषता नहीं है-
 (a) शारीरिक विकास में तीव्रता
 (b) दूसरों पर निर्भरता
 (c) मानसिक विकास में तीव्रता
 (d) नैतिकता का होना।
69. शारीरिक विकास का क्षेत्र है-
 (a) स्नायुमण्डल
 (b) मांसपेशियाँ
 (c) इन्डोसीन गलैण्ड्स
 (d) उपरोक्त सभी।
70. अच्छे चरित्र में होती है-
 (a) सहयोग (b) धोखा
 (c) झूठ (d) बेईमानी
71. "बालक जीव व अजीव में भेद करना सीखा जाता है" पियाजे के अनुसार-
 (a) इन्द्रिय गामक अवस्था
 (b) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था में
 (c) ठोस संक्रियात्मक अवस्था में
 (d) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था में।

उत्तरमाला

1	(d)	11	(d)	21	(a)	31	(d)	41	(d)	51	(c)	61	(d)	71	(b)
2	(a)	12	(b)	22	(d)	32	(a)	42	(d)	52	(a)	62	(d)		
3	(b)	13	(c)	23	(b)	33	(d)	43	(a)	53	(b)	63	(b)		
4	(b)	14	(a)	24	(b)	34	(c)	44	(a)	54	(d)	64	(d)		
5	(c)	15	(d)	25	(d)	35	(d)	45	(d)	55	(c)	65	(d)		
6	(b)	16	(b)	26	(d)	36	(c)	46	(b)	56	(d)	66	(d)		
7	(b)	17	(d)	27	(d)	37	(a)	47	(d)	57	(d)	67	(d)		
8	(a)	18	(a)	28	(c)	38	(a)	48	(d)	58	(c)	68	(d)		
9	(b)	19	(d)	29	(b)	39	(b)	49	(d)	59	(a)	69	(d)		
10	(a)	20	(b)	30	(a)	40	(c)	50	(b)	60	(d)	70	(a)		

समाजीकरण प्रक्रिया (Socialization Process)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। बालक जन्म लेने के पश्चात् धीरे-धीरे समाज के सम्पर्क में आता है, उसमें सामाजिक चेतना व सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होनी प्रारम्भ हो जाती है। वह समाज द्वारा स्वीकृत परम्पराओं, मान्यताओं, आकांक्षाओं, मूल्यों, आदर्शों और संस्कृति का अनुपालन करने लगता है व उन्हीं के अनुसार व्यवहार भी करने लगता है, यही समाजीकरण कहलाता है। इस प्रकार समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में रहकर उसके मूल्यों, आदर्शों, विश्वासों एवं जीवन-शैली को सीखकर उसे अपने व्यक्तिगत जीवन का हिस्सा बना लेता है। **ड्यूवर** ने इसे परिभाषित करते हुए इस प्रकार लिखा है-

“समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक पर्यावरण के साथ अनुकूलन करता है और इस प्रकार उस समाज का मान्य सहयोगी व कुशल सदस्य बनता है।”

ग्रौन के अनुसार, “समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक सांस्कृतिक विशेषतायें आत्म-गौरव और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।”

हैविगहार्ट एवं न्यूमार्टन के अनुसार, “समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक अपने समाज के स्वीकृत ढंगों को सीखता है तथा इन ढंगों को अपने व्यक्तित्व का अंग बना लेता है।”

निष्कर्षतः से कहा जा सकता है कि समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति एवं व्यक्ति तथा व्यक्ति व समाज के मध्य अन्तःक्रिया होती है व व्यक्ति समाज की भाषा, रहन-सहन, खान-पान और आचरण की विधियाँ, रीति-रिवाज सीखता है एवं समाज में समायोजन करता है।

समाजीकरण के अभिकरण (Agencies of Socialization)

समाजीकरण अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में समाज की अनेक संस्थाएँ कार्य करती हैं जो इस प्रकार हैं-

- परिवार** : बालक के समाजीकरण का सबसे प्रमुख और सबसे महत्वपूर्ण कारक परिवार है। **किम्बल ग्रंथ** के अनुसार, “समाज में समाजीकरण के विभिन्न साधनों में परिवार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।” बालक का जन्म व पालन-पोषण परिवार में होता है। परिवार से ही वह खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, वस्त्र पहनना, पूजा-पाठ करना आदि कार्यों को सीखता है। परिवार ही उसे सामाजिक नियमों का प्रारम्भिक व व्यवहारिक ज्ञान देता है। माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, चाचा-चाची आदि परिवार के सदस्य ही बालक को उचित-अनुचित व वांछनीय-अवांछनीय का ज्ञान कराते हैं।
- विद्यालय** : परिवार के बाद विद्यालय दूसरा महत्वपूर्ण अभिकरण है। परिवार में सीखे गये व्यवहार का परिमार्जन विद्यालय में अध्यापकों द्वारा किया जाता है। विद्यालयों में मनाये जाने वाले उत्सवों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद, विभिन्न प्रतियोगिताओं, पत्र-पठन, पर्यटन आदि के द्वारा अध्यापक बालक के समाजीकरण में सहयोग प्रदान कर सकता है। विद्यालय का वातावरण, प्रेम, सहयोग, सद्भावना, परम्पराओं से पूर्ण अनुशासित होना चाहिए।
- पड़ोस या संगी-साथी (Neighbourhood or Peer group)** : बालक अपने साथी बालकों से बहुत कुछ सीखता है। वह अपने साथी बालकों के साथ खेलता है, लड़ता-झगड़ता है तथा सहयोग करता है। ये उसके

समाजीकरण में सहयोग देते हैं। संगी-साथी अच्छे व सुसंस्कृत होने चाहिए ताकि बालकों का समाजीकरण उचित रूप में तीव्र गति से हो सके।

4. **जाति** : प्रत्येक जाति में प्रचलित अपनी रीतियाँ, परम्पराएँ, मूल्य तथा आदर्श होते हैं, बालक इन्हीं को अपनाता है व उसका समाजीकरण होता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि माता-पिता, अध्यापक, संगी-साथी, जाति, समुदाय, अनेक संस्थायें, खेलकूद व स्काउट-गाइड व अनेक अन्य अभिकरणों द्वारा बालक का समाजीकरण होता है। बालक अनुसरण करके, निर्देश प्राप्त करके, सहानुभूति द्वारा, सहयोग द्वारा, पुरस्कार व दण्ड आदि के द्वारा सीखता है व उसका समाजीकरण संभव हो पाता है।

भाषा एवं विचार

भाषा, विचार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा द्वारा ही व्यक्ति अपने भावों, विचारों तथा इच्छाओं को दूसरों तक प्रेषित करता है तथा दूसरों की भावनाओं व इच्छाओं को समझ पाता है।

मानव जीवन में भाषा विकास बौद्धिक विकास की उत्तम कसौटी मानी जाती है। बालक को सर्वप्रथम भाषा का ज्ञान परिवार से होता है। इसके पश्चात् वह विद्यालय व समाज के सम्पर्क में आकर समृद्ध होता है।

- **शैशवावस्था में भाषा विकास** : जन्म के समय शिशु रुदन करता है, उसे इस समय ना तो स्वयं का ज्ञान होता है, ना व्यंजनों का। वह मात्र ध्वनियाँ निकालता है। 10 माह की आयु में वह पहला शब्द बोलता है जिसे बार-बार दोहराता है, 12 माह होने पर भी वह स्पष्ट नहीं बोल पाता। **मेकार्थी** कहते हैं कि 18 मास के बालक की भाषा 26 प्रतिशत समझ में आती है। भाषा विकास के क्रम का परिणाम अनुमानतः इस प्रकार है-

आयु	शब्द
जन्म से 8 मास	0
10 मास से 1 वर्ष	1 से 3
1 वर्ष से 1 वर्ष 6 माह	19 से 23
1 वर्ष 9 मास से 2 वर्ष	118 से 213
4 वर्ष	1550
5 वर्ष	2075
6 वर्ष	2562

प्रारम्भ में शिशु रोता है, फिर अस्पष्ट ध्वनियाँ निकालता है। स्वर यंत्र परिपक्व होने पर पहले से अधिक ध्वनि निकालता है। सात-आठ माह का होने पर दा, ना, व मौँ दुहराता है, छोटे पूर्ण वाक्य बोलने लगता है।

- **बाल्यावस्था में भाषा विकास** : आयु के साथ-साथ बालकों के सीखने की गति में भी वृद्धि होती है। "स्टीक व लुफ्ट तथा सस्त के अध्ययनानुसार, जब बालक स्कूल जाने लगते हैं, तब उनकी शब्दावली 20,000 से 24,000 शब्दों तक की होती है, जो किसी मानद शब्दकोष के कुल शब्दों का लगभग 5 प्रतिशत से 6 प्रतिशत है।

सौशोर ने बाल्यावस्था में भाषा विकास का अध्ययन करके निम्न परिणाम दिये हैं-

आयु (वर्ष)	शब्द
4	5,600
5	9,600
6	14,700
7	21,200
8	26,309
10	34,300

किशोरावस्था में भाषा विकास : किशोरावस्था में किशोर का शब्दकोश विस्तृत होता है। इस आयु में उच्चारण के प्रति भी वे सचेत हो जाते हैं, व्याकरण दोष घटता है व प्रवाह आ जाता है। कल्पना-शक्ति व

चिन्तन-शक्ति का प्रभाव भाषा विकास पर स्पष्ट दिखता है। भावुकता का मिश्रण होने से भाव-सौन्दर्य प्रस्फुटित होता है।

भाषा विकास के चरण-

(A) पूर्व भाषा विकास :

1. रुदन
2. विस्फोटक ध्वनियाँ, जो बलबलाना (Bubbling) में बदली हैं
3. हाव-भाव
4. सावैगिक अभिव्यक्ति।



(B) उत्तर भाषा विकास :

- | | |
|--------------------------------|-----------------------------|
| 1. दूसरों की भाषा को समझना | 2. शब्दावली का निर्माण करना |
| 3. शब्दों का वाक्यों में संगठन | 4. उच्चारण |
| 5. भाषा विकास का स्वामित्व | |



कारक

1. **स्वास्थ्य** : यदि बालक प्रथम के वर्षों में बीमारी से ग्रसित है तो भाषा विकास अवरुद्ध होता है।
2. **बुद्धि** : बुद्धि स्तर ऊँचा हो तो भाषा विकास तेजी से होता है, कम बुद्धि होने पर कम शब्दावली, गलत उच्चारण पाया जाता है।
3. **यौन भिन्नता** : लड़कियों की अपेक्षा भाषा विकास श्रेष्ठ होता है, वे लम्बे वाक्य युक्तिरहित बोलती हैं।
4. **सामाजिक-आर्थिक स्तर** : उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवार के बालक निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवार के बालकों से अधिक लम्बे वाक्यों का प्रयोग करते हैं, उनकी शब्दावली भी अच्छी होती है।
5. **परिवार का आकार** : एक बच्चा होने पर माता-पिता के विशेष प्रशिक्षण देने के कारण भाषा विकास तेजी से होता है। 2-3 बच्चों पर ध्यान न दे पाने के कारण विकास मंदित होता है।
6. **जन्मक्रम** : जन्मक्रम का भी प्रभाव पड़ता है, माता-पिता पहले बच्चे पर दूसरे, तीसरे जन्मक्रम वाले बच्चों की अपेक्षा अधिक समय व ध्यान देते हैं। अतः उसका भाषा विकास तेजी से होता है।
7. **माता-पिता द्वारा प्रेरणा** : जिन बालकों को माता-पिता द्वारा शब्दों को बोलने, लिखने व पढ़ने के लिए अधिक प्रेरणा मिलती है, उनमें भाषा विकास तेजी से होता है।


भाषा विकास में बाधाएँ

1. अत्यधिक रोना
2. समझने में कठिनाई
3. विलंबी वाक् (Delayed Speech)
4. वाक् विकार
 - तुतलाना
 - हकलाना
 - अस्पष्ट उच्चारण

भाषा सीखने के साधन

- अनुकरण
- कहानी सुनना
- खेल
- वार्तालाप व बातचीत
- प्रश्नोत्तर

समाज निर्माण में लैंगिक मुद्दे

ईश्वर द्वारा बनायी गई इस सृष्टि में बालक व बालिका, दोनों को समान बनाया गया। दोनों को एक गाड़ी के दो पहियों के समान माना गया, परन्तु मानव ने अपने स्वार्थवश इन दोनों में भेद किया। एक को बलिष्ठ माना दूसरे को कमजोर, एक को बुद्धिमान व शिक्षायोग्य तथा दूसरे को  व शिक्षा से वंचित रखा। पुराने समय में नारी की स्थिति दयनीय थी, शिक्षा के अभाव व रूढ़िवादिता के कारण, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह जैसी बुराइयों समाज में व्याप्त थीं, परन्तु समय के बदलने के साथ-साथ कुरीतियों व बुराइयों दूर हुईं व बालिकाओं की स्थिति बेहतर हुई, परन्तु आज भी कुछ स्थानों पर यह भेदभाव व्याप्त है।

बालक व बालिकाओं, दोनों को स्कूल भेजने के स्थान पर, बालिकाओं को परम्परागत कार्यों हेतु घर पर ही रोक लिया जाता है। ऐसा नहीं है कि बालिकाओं में तर्क, स्मरण, विचार, कल्पना-शक्तियों का अभाव है, या उनका बौद्धिक स्तर लड़कों से कम हो, परन्तु दूषित सोच को परिवर्तित करना कठिन है।

बालिकाओं का विद्यालय जाना व शिक्षित होना प्रत्येक घर व समाज के लिए महत्वपूर्ण है, इस दिशा में समाज में सभी का प्रयास आवश्यक है। प्रत्येक अभिभावकों व समाज के जिम्मेदार व्यक्तियों का दायित्व है कि बालिका शिक्षा हेतु प्रयास करें। बालिकाओं को ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में विद्यालय भेजा जाये। समझा जाये कि बालिका शिक्षा ही समाज को उन्नति के पथ पर ले जा सकती है। आवश्यकता यह है कि कक्षा में या परिवार में बालिकाओं को यह अहसास दिलाया जाये कि वे प्रत्येक कार्य को करने में सक्षम हैं। अध्यापक कक्षा में बालक बालिकाओं में भेदभाव ना करें। अभिभावक बालिकाओं को शिक्षा का महत्व समझें व गंभीरता से लेते हुए उन्हें विद्यालय भेजें। विद्यालय अनुपस्थित छात्राओं पर ध्यान दें व उनके विषय में जानकारी एकत्रित करें, छात्राओं के लिए विशेष छात्रवृत्तियाँ, पाठ्य-सामग्री तथा यूनिफॉर्म इत्यादि उपलब्ध कराएँ। अभावग्रस्त व सुविधाविहीन जातियों पर विशेष ध्यान दिया जाए।

छात्राओं की शिक्षा की ओर अभिभावकों, अध्यापकों व सरकार द्वारा विशेष प्रयास व चिन्तन किया जाना आवश्यक है।

अभ्यास-1 : विगत वर्षों के CTET एवं STET के प्रश्न

1. निम्न में से कौन-सा बच्चे की सामाजिक मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के साथ सम्बद्ध नहीं है? [CTET-2011-I]
 - (a) शरीर से अपशिष्ट पदार्थों का निश्चित रूप से बाहर निकलना
 - (b) सार्थक (संगत) की आवश्यकता
 - (c) सामाजिक अनुमोदन अथवा सरहना की आवश्यकता
 - (d) संवेगात्मक सुरक्षा की आवश्यकता।
2. निम्नलिखित में से किस अवस्था में बच्चे अपने समवयस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं? [CTET-2011-II]
 - (a) पूर्व-बाल्यावस्था (b) बाल्यावस्था
 - (c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था।
3. सबसे अधिक गहन और जटिल समाजीकरण होता है- [CTET-2011-II]
 - (a) प्रौढ़ावस्था के दौरान
 - (b) व्यक्ति के पूरे जीवन में
 - (c) किशोरावस्था के दौरान
 - (d) पूर्व-बाल्यावस्था के दौरान।
4. किसी उद्दीपन के निरन्तर दिये जाने से व्यवहार में होने वाला अस्थायी परिवर्तन कहलाता है-
 - (a) अभ्यस्तता [RTET-2011-I]
 - (b) अधिगम
 - (c) अस्थायी अधिगम
 - (d) अभिप्रेरणा।
5. जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देख कर सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव कर, को कहा जाता है-
 - (a) सामाजिक अधिगम [RTET-2011-II]
 - (b) अनुबन्धन
 - (c) प्रायोगिक अधिगम
 - (d) आकस्मिक अधिगम।
6. जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, उनका भण्डारण निम्न में से कौन-सा है? [RTET-2011-II]
 - (a) इष्टम् (b) अहम्
 - (c) परम अहम् (d) इष्टम् एवं अहम्।
7. बच्चों के संज्ञात्मक विकास को सबसे अच्छे तरीके से कहाँ परिभाषित किया जा सकता है? [UPTET-2011-I]
 - (a) खेल के मैदान में
 - (b) विद्यालय परिसर में
 - (c) आडिटोरियम में
 - (d) गृह में।
8. परिवार एक साधन है- [UPTET-2011-II]
 - (a) अनौपचारिक शिक्षा का
 - (b) औपचारिक शिक्षा का
 - (c) गैर-औपचारिक शिक्षा का
 - (d) दूरस्थ शिक्षा का।
9. एक शिक्षक विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है- [UPTET-2011-II]
 - (a) महान व्यक्तियों के बारे में बोलकर
 - (b) अनुशासन की अनुभूति को विकसित कर
 - (c) आदर्श रूप से बताकर
 - (d) उन्हें अच्छी कहानियाँ सुनाकर।
10. बच्चों में संवेगात्मक समायोजन प्रभावी होता है-
 - (a) व्यक्तित्व निर्माण में [UPTET-2011-I]
 - (b) कक्षा-शिक्षण में
 - (c) अनुशासन में
 - (d) इनमें से सभी।
11. असंगठित घर से आनेवाला बच्चा सबसे अधिक कठिनाई का अनुभव करेगा-
 - (a) सुनिर्मित पाठों में [UPTET-2011-II]
 - (b) स्वतंत्र अध्ययन में
 - (c) नियोजित निर्देश में
 - (d) अभ्यास पुस्तिकाओं में।
12. चरित्र का विकास होता है- [UPTET-2011-II]
 - (a) इच्छा-शक्ति द्वारा
 - (b) बर्ताव एवं व्यवहार द्वारा
 - (c) नैतिकता द्वारा
 - (d) इनमें से सभी।
13. बालिका शिक्षा को महत्व देना उचित है, कारण- [UPTET-2011-II]
 - (a) बालिकाएँ बालकों से अधिक बुद्धिमती हैं
 - (b) बालिकाएँ बालकों से अल्पसंख्यक हैं
 - (c) अतीत में बालिकाओं को बुरी तरह से विभेदित किया जाता था

- (d) किसी सामाजिक परिवर्तन के नेतृत्व में केवल बालिकाएँ समर्थ हैं।
14. एक बच्ची को उसके पिता चहलकदमी करा रहे थे। बच्ची जानती थी कि चिड़िया जैसी चीजें होती हैं, परन्तु उसने कभी पतंग को नहीं देखा था। पतंग को देखकर उसने कहा "चिड़िया को तो देखो" उसके पिता ने कहा "यह एक पतंग है"। यह उदाहरण दिखाता है—
[CGTET-2011-II]
- (a) सम्मिलन (b) समायोजन
(c) संरक्षण (d) वस्तु का प्रदर्शन
15. सामाजिक अधिगम आरम्भ होता है—
[CGTET-2011-II]
- (a) अलगाव से
(b) भीड़ से
(c) संपर्क से
(d) दृश्य-श्रव्य सामग्री से
16. राज्य स्तर की एक एकल-गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को तैयार करते समय एक विद्यालय लड़कियों को वरीयता देता है। यह दर्शाता है—
[CTET-Jan. 2012-I]
- (a) प्रयोजनात्मक उपागम
(b) प्रगतिशील चिंतन
(c) लैंगिक पूर्वाग्रह
(d) वैश्विक प्रवृत्तियाँ
17. शिक्षा के संदर्भ में समाजीकरण से तात्पर्य है—
[CTET-Jan. 2012-I]
- (a) समाज में बड़ों का सम्मान करना
(b) सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन
(c) सामाजिक मानदंडों का सर्वत्र अनुपालन करना
(d) अपने सामाजिक मानदंड बनाना।
18. छोटे शिक्षार्थियों को कक्षा-कक्ष में समयवस्तुओं के साथ अंतःक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे— [CTET-Jan. 2012-I]
- (a) पाठ्यक्रम को बहुत जल्दी पूरा किया जा सके
(b) वे पढ़ने के दौरान सामाजिक कौशल सीख सकें
(c) शिक्षक कक्षा-कक्ष को बेहतर तरीके से नियंत्रित कर सकें
(d) वे एक-दूसरे से प्रश्नों के उत्तर सीख सकें।
19. सहयोगी अधिगम में अधिक उम्र के प्रवीण विद्यार्थी, छोटे और कम निपुण विद्यार्थियों को मदद करते हैं। इससे— [CTET-2012-II]
- (a) गहन प्रतियोगिता होती है
(b) उच्च नैतिक विकास होता है
(c) समूहों में द्वन्द्व होता है
(d) उच्च उपलब्धि और आत्म-सम्मान विकसित होता है।
20. व्यवहार का 'करना' में आता है।
[CTET-2012-II]
- (a) सीखने के गतिक (कोर्नेटिव) क्षेत्र
(b) सीखने के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र
(c) सीखने के संज्ञानात्मक क्षेत्र
(d) सीखने के भावात्मक क्षेत्र।
21. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों में व्यस्त रखती है, जैसे— समूह-चर्चा, समूह-परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि। यह सीखने के किस आयाम को उजागर करता है? [CTET-2012-II]
- (a) सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम
(b) मनोरंजन द्वारा अधिगम
(c) भाषा-निर्देशित अधिगम
(d) प्रतियोगिता-आधारित अधिगम।
22. एक विद्यार्थी अपने समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति आक्रामक व्यवहार करता है और विद्यालय के मानदण्डों को नहीं मानता। इस विद्यार्थी को में सहायता की आवश्यकता है। [CTET-2012-II]
- (a) भावात्मक क्षेत्र
(b) उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल
(c) संज्ञानात्मक क्षेत्र
(d) मनोवैज्ञानिक क्षेत्र।
23. शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त, ये से सहायता करती है।
[CTET-2012-II]
- (a) दुर्श्चिता (b) समाजीकरण
(c) मूल्य द्वन्द्व (d) आक्रामकता
24. एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक से बचाती है।
[CTET-2012-II]
- (a) लैंगिक समानता

- (b) सामाजिक उत्तरदायित्व
(c) लैंगिक पूर्वाग्रह
(d) लैंगिक संवेदनशीलता।
25. "समाजीकरण" का अर्थ है—
(a) सामाजिक मानदंडों का कठोर रूप से पालन करना [CTET May-2012-II]
(b) समाज में समायोजित होना
(c) सामाजिक मानदंडों के विरुद्ध विद्रोह करना
(d) सामाजिक विविधता को समझना।
26. "विचार न केवल भाषा को निर्धारित करते हैं, बल्कि उसे आगे भी बढ़ाते हैं।" यह विचार
द्वारा रखा गया। [CTET May-2012-II]
(a) जॉन पियार्ने (b) कोहलबर्ग
(c) वाइगोट्स्की (d) पैवलोव
27. भाषा में अर्थ को सबसे छोटी इकाई..... है।
(a) संकेतप्रयोग विज्ञान (प्रेगमैटिक्स)
(b) वाक्य [CTET-Nov. 2012-I]
(c) रूपिम
(d) स्वनिम।
28. विद्यालय में लिंग-भेदभाव से बचने का सर्वोत्तम तरीका हो सकता है। [CTET-Nov. 2012-I]
(a) विद्यालय में लिंग-भेदभाव को दूर करने के लिए नियम बनाना और कड़ाई से उसका पालन करवाना
(b) संगीत प्रतियोगिता के लिए लड़कियों को अपेक्षा अधिक लड़कों का चयन करना
(c) शिक्षकों द्वारा उनके लिंग पक्षपातपूर्ण व्यवहारों का अधिसंज्ञान
(d) पुरुष एवं महिला शिक्षकों को समान संख्या में भर्ती करना।
29. मोनिका, जो गणित की शिक्षिका है, राधिका से एक प्रश्न पूछती है। राधिका से कोई उत्तर न मिलने पर वह तुरंत मोहन से दूसरा प्रश्न पूछती है। जब उसे महसूस होता है कि मोहन उत्तर बताने में संघर्ष कर रहा है, तो वह अपने प्रश्न के शब्दों को बदलती है। मोनिका की यह प्रवृत्ति यह प्रदर्शित करती है कि वह—
[CTET-Nov. 2012-II]
(a) मोहन का पक्ष लेकर लिंग भूमिकाओं में रूढ़िबद्धता को बढ़ावा दे रही है
(b) राधिका को किसी उलझनपूर्ण स्थिति में नहीं डालना चाह रही है
- (c) इस तथ्य से पूर्णतः परिचित है कि राधिका सवाल को जवाब देने के योग्य नहीं है।
(d) अपने सवाल के प्रति थोड़ा घबरा गई है।
30. नर्सरी कक्षा में शुरुआत करने के लिए कौन-सी विषय-वस्तु (thev) सबसे अच्छी है?
[CTET-Nov. 2012-I]
(a) मेरा प्रिय मित्र (b) मेरा पड़ोस
(c) मेरा विद्यालय (d) मेरा परिवार।
31. एक विद्यार्थी कहता है, "उसका दादा आया है।" एक शिक्षक होने के नाते आपकी प्रतिक्रिया होनी चाहिए— [CTET-Nov. 2012-I]
(a) आप अपनी भाषा पर ध्यान दीजिए
(b) अच्छा, उसके दादाजी आए हैं
(c) बच्चे, आप सही वाक्य नहीं बोल रहे
(d) 'दादा आया है' को जगह पर 'दादाजी आए हैं' कहना चाहिए।
32. बुद्धि-लब्धांक के आधार पर विभिन्न समूहों में विद्यार्थियों का वर्गीकरण उनकी स्व-गरिमा को _____ है और उनके शैक्षणिक निष्पादन को _____ है।
(a) घटाता; प्रभावित नहीं करता
(b) बढ़ाता; घटाता [CTET-Nov. 2012-I]
(c) बढ़ाता; बढ़ाता
(d) घटाता; घटाता।
33. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के क्रियान्वयन के बाद कक्षा-कक्ष—
[CTET-Nov. 2012-I]
(a) जेंडर के अनुसार अधिक समजातीय हैं
(b) आयु के अनुसार अधिक समजातीय हैं
(c) आयु के अनुसार अधिक विषमजातीय हैं
(d) अप्रभावित हैं, क्योंकि शिक्षा का अधिकार विद्यालय में कक्षा की औसत आयु को प्रभावित नहीं करता।
34. शारीरिक-गतिक बुद्धि रखने वाले बच्चे की अंतिम अवस्था निम्नलिखित में से कौन-सी हो सकती है?
[CTET-Nov. 2012-I]
(a) कवि
(b) वाचक
(c) राजनैतिक नेता
(d) शल्य चिकित्सक।
35. विज्ञान के प्रयोगों में, सामान्यतः लड़के उपकरणों का नियंत्रण अपने हाथों में लेते हैं और लड़कियों से आँकड़ों को रिकॉर्ड करने अथवा बर्तनों को

धोने के लिए कहते हैं। यह प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि- [CTET-Nov. 2012-I]

- (a) लड़के उपकरणों को ज्यादा कुशलता से सँभाल सकते हैं, क्योंकि वे इस प्रकार के कार्यों को करने में प्राकृतिक रूप से सक्षम होते हैं
 - (b) लड़कियाँ नाजुक होने के कारण ऐसे काम करना पसंद करती हैं जिनमें ऊँची को खपत कम होती है
 - (c) लड़कियाँ बेहतर गति अवलोकनकर्ता होती हैं और बिना किसी गलती के आँकड़ों का रिकॉर्ड रखती हैं
 - (d) पुरुष और स्त्री को रूढ़िबद्ध भूमिकाएँ विद्यालय में भी होती हैं।
36. कक्षा का सिद्धांत कक्ष में शिक्षक और विद्यार्थी किस प्रकार जेंडर को _____ करते हैं, यह सीखने के वातावरण _____। [CTET-Nov. 2012-I]
- (a) परिभाषित; को कम प्रभावी बनाता है
 - (b) व्याख्यायित; पर कोई प्रभाव नहीं डालता
 - (c) निर्मित; पर प्रभाव डालता है
 - (d) रूपांतरित; को धुंधला करता है।
37. अधिकांश बालक अपनी मातृभाषा सीख लेते हैं- [HTET 2012-I]
- (a) एक वर्ष की आयु में
 - (b) चार वर्ष की आयु में
 - (c) छः वर्ष की आयु में
 - (d) दो वर्ष की आयु में।
38. बच्चे का सामाजिक विकास वास्तव में प्रारम्भ होता है- [HTET 2012-I]
- (a) विद्यालय पूर्व-अवस्था में
 - (b) शैशवावस्था में
 - (c) पूर्व-बाल्यावस्था में
 - (d) उत्तर-बाल्यावस्था में।
39. विद्यालय में लिंग-भेदभाव से बचने का सर्वोत्तम तरीका हो सकता है- [CTET-Nov. 2012-I]
- (a) विद्यालय में लिंग-भेदभाव को दूर करने के लिए नियम बनाना और कड़ाई से उसका पालन करवाना
 - (b) संगीत प्रतियोगिता के लिए लड़कियों की अपेक्षा अधिक लड़कों का चयन करना
 - (c) शिक्षकों द्वारा उनके लिंग पक्षपातपूर्ण व्यवहारों का अधिसंज्ञान

(d) पुरुष एवं महिला शिक्षकों को समान संख्या में भर्ती करना।

40. कक्षा में जेंडर रूढ़िबद्धता से बचने के लिए एक शिक्षक को- [CTET 2013-I]

- (a) लड़के-लड़कियों को एक साथ अ-पारंपरिक भूमिकाओं में रखना चाहिए
- (b) 'अच्छी लड़की', 'अच्छा लड़का' कहकर शिक्षार्थियों के अच्छे कार्य की सराहना करनी चाहिए
- (c) कुर्सी में भाग लेने के लिए लड़कियों को निरुत्साहित करना
- (d) लड़कों को जोखिम उठाने और निर्भीक बनने के लिए प्रोत्साहित करना।

41. विद्यालयों को किसके लिए वैयक्तिक भिन्नताओं को पूरा करना चाहिए? [CTET-2013-I]

- (a) वैयक्तिक शिक्षार्थियों के मध्ये खाई को कम करने के लिए
- (b) शिक्षार्थियों के निष्पादन और योग्यताओं को समान करने के लिए
- (c) यह समझने के लिए कि क्यों शिक्षार्थी सीखने के योग्य या अयोग्य हैं
- (d) वैयक्तिक शिक्षार्थी को विशिष्ट होने की अनुभूति कराने के लिए।

42. शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को संबोधित करने के लिए एक विद्यालय किस प्रकार का सहयोग उपलब्ध करवा सकता है? [CTET-2013-I]

- (a) बाल-केंद्रित पाठ्यचर्या का पालन करना और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर उपलब्ध कराना
- (b) शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को समाप्त करने के लिए हर संभव उपाय करना
- (c) धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों को विशेष विद्यालयों में भेजना
- (d) सभी शिक्षार्थियों के लिए समान स्तर की पाठ्यचर्या का अनुगमन करना।

43. समाजीकरण है- [CTET-2013-I]

- (a) शिक्षक एवं पढ़ाए गए के बीच संबंध
- (b) समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया
- (c) समाज के मानदंडों के साथ अनुकूलन
- (d) सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन।

44. सामाजिक भूमिकाओं के कारण, न कि जीव वैज्ञानिक संपर्क के कारण सीपी गई विशिष्टताएँ कहलाती हैं। [CTET-2013-II]
- जेंडर भूमिका अभिवृत्ति
 - जेंडर भूमिका दबाव
 - जेंडर भूमिका रूढ़िबद्धता
 - जेंडर भूमिका नैदानिकी।
45. हालाँकि यह स्पष्ट रूप से उनकी सुरक्षा आवश्यकताओं के उल्लंघन में था, कैप्टन विक्रम बत्रा अपने देश को बचाने के दौरान कारगिल युद्ध में मारे गए। संभवतः उन्हें था/थी। [CTET-2013-II]
- नवीन अनुभव की प्राप्ति को इच्छा
 - आत्म-सिद्धि की प्राप्ति
 - अपने अपनत्व संबंधी आवश्यकताओं की उपेक्षा
 - अपने परिवार के नाम की ख्याति-प्राप्ति।
46. प्रतिक्रिया का विलोप होना निम्नलिखित में से किसके बाद अधिक कठिन है? [CTET-2013-II]
- आंशिक पुनर्बलन
 - निरंतर पुनर्बलन
 - दंड
 - मौखिक भर्त्सना।
47. के अतिरिक्त निम्नलिखित सभी तथ्य संकेत करते हैं कि बच्चा कक्षा में संवेगात्मक और सामाजिक रूप से समायोजित है। [CTET-2013-II]
- हमउम्र साथियों के साथ मधुर संबंधों का विकास
 - चुनौतीपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना और उन्हें दृढ़तापूर्वक करते रहना
 - क्रोध तथा हर्ष, दोनों को प्रभावी रूप से प्रबंधित करना
 - हमउम्र साथियों के साथ प्रतियोगिता पर दृढ़तापूर्वक ध्यान केंद्रित करना।
48. समाजीकरण में सम्मिलित हैं - सांस्कृतिक संवरण और। [CTET-2013-II]
- विद्रोहियों को निरुत्साहित करना
 - वैयक्तिक व्यक्तित्व विकास
 - बच्चों को लेंबलों में समायोजित करना
 - संवेगात्मक समर्थन उपलब्ध कराना।
49. भाषा-अवबोधन से सम्बद्ध विकार है- [CTET-Feb.-2014-I]
- चलाघात
 - पठन-वैकल्य
 - वाक्-सम्बन्ध
 - भाषाघात।
50. कक्षा में विद्यार्थियों के वैयक्तिक विभेद- [CTET-Feb.-2014-II]
- लाभकारी नहीं हैं, क्योंकि अध्यापकों को वैविध्यपूर्ण कक्षा को नियंत्रित करने की आवश्यकता है
 - हानिकारक हैं, क्योंकि इनसे विद्यार्थियों में परस्पर द्वन्द उत्पन्न होते हैं
 - अनुपयुक्त हैं, क्योंकि ये सर्वाधिक मन्द विद्यार्थी के स्तर तक पाठ्यचर्या के स्थानान्तरण की गति को कम करते हैं
 - लाभकारी हैं, क्योंकि ये विद्यार्थियों की संज्ञात्मक संरचनाओं को खोजने में अध्यापकों को प्रवृत्त करते हैं
51. मानवीय विकास में आनुवंशिकता एवं परिवेश को भूमिका के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन समुचित है? [CTET-Feb.-2014-II]
- परिवेश की भूमिका लगभग स्थिर-सी रहती है, जबकि आनुवंशिकता का प्रभाव परिवर्तित हो सकता है
 - 'व्यवहारवाद' के सिद्धान्त प्रायः मानवीय विकास में 'प्रकृति' की भूमिका पर आधारित है
 - विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आनुवंशिकता एवं परिवेश का सापेक्षिक प्रभाव परिवर्तनशील है
 - भारत सरकार की विभेदात्मक क्षतिपूर्कता सम्बन्धी नीति मानवीय विकास में 'प्रकृति' की भूमिका पर आधारित है।
52. समाजीकरण के सन्दर्भ में विद्यालयों के पास प्रायः एक प्रचलन पाठ्यचर्या विद्यमान रहती है, जिसमें निहित है- [CTET-Feb.-2014-II]
- बालात्मक अधिगम, चिंतन व समकक्षीय साथी एवं अध्यापक की अनुकृति द्वारा विशेष रूप से अपनाया जाने वाला व्यवहार

- (b) अन्तःक्रिया व सामग्री द्वारा विद्यालयों में प्रस्तुत किए जाने वाले सामाजिक भूमिकाओं से सम्बद्ध अनीपचारिक संकेत
- (c) परिवारों के माध्यम से विद्यार्थियों का समझौतापूर्ण व प्रतिरोधात्मक समाजीकरण
- (d) मूल्यों व अभिवृत्तियों का शिक्षण एवं आकलन।
53. कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से सम्बद्ध जटिल परिदृश्यों पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते हैं।
[CTET-Feb.-2014-II]
- (a) पारम्परिक
(b) रचनात्मक
(c) अध्यापक-केन्द्रित
(d) सामाजिक-रचनात्मक।
54. भाषा-विकास के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र पिछाई के द्वारा कमतर आँका गया?
[CTET-Feb.-2014-II]
- (a) अनुवर्षिकता
(b) सामाजिक अन्तःक्रिया
(c) अह-केन्द्रित भाषा
(d) विद्यार्थी द्वारा सक्रियात्मक रचना।
55. भारत सरकार ने प्राथमिक विद्यालयों के लिए मध्याह्न भोजन योजना प्रारम्भ की है। निम्नलिखित में से कौन-सा अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त इस योजना का समर्थन करता है?
[CTET-Feb.-2014-II]
- (a) व्यवहारवादी (b) समाज-सांस्कृतिक
(c) संज्ञानात्मक (d) मानवीय।
56. व्यक्तित्व का 'समाजशास्त्रीय प्रकार का सिद्धांत' दिया गया-
[HMET-2014-I]
- (a) हिप्पोक्रेटस के द्वारा
(b) क्रैचमर के द्वारा
(c) शैलडन के द्वारा
(d) स्प्रेजर के द्वारा।
57. 'सर्वाधिक उपयुक्त जीवित (Survival of the fittest) रहता है' का सिद्धान्त है-
[UPTET-2014-I]
- (a) लेमार्क का (b) हैरिसन का
(c) डार्विन का (d) मैकडूगल का।
58. साहचर्य के नियम हैं- [UPTET-2014-II]
- (a) समानता का नियम
(b) वैषम्य का नियम
(c) समीपता का नियम
(d) ये सभी।
59. किशोरावस्था में संवेगों की तीव्रता किस प्रकार प्रकट होती है? [UPTET-2014-II]
- (a) प्रतिकूल पारिवारिक सम्बन्ध
(b) व्यवसाय की समस्या
(c) नई परिस्थिति के साथ समायोजन
(d) उपरोक्त सभी।
60. निम्न में से कौन-सा सामाजीकरण की निष्क्रिय एजेंसी है? [CTET-Sept.-2014-I]
- (a) स्वास्थ्य क्लब
(b) परिवार
(c) ईको क्लब
(d) सार्वजनिक पुस्तकालय।
61. कक्षा-कक्ष में जेंडर (लिंग) विभेद
[CTET-Sept.-2014-I]
- (a) शिक्षार्थियों के निष्पादन को प्रभावित नहीं करता है
(b) शिक्षार्थियों के द्वयोन्मुख प्रयासों अथवा निष्पादन का कारण बन सकता है
(c) पुरुष शिक्षार्थियों के वृद्धि-उन्मुख प्रयासों अथवा निष्पादन का कारण बन सकता है
(d) महिला शिक्षकों की अपेक्षा पुरुष शिक्षकों के द्वारा अधिक किया जाता है।
62. छात्राएँ- [CTET-Sept.-2014-I]
- (a) गणित के सवाल अच्छे से सीखती हैं, लेकिन उन्हें तब कठिनाई आती है जब उनसे उनके तर्कों के बारे में पूछा जाता है
(b) अपनी उम्र के लड़कों की तरह गणित में अच्छी हैं
(c) अपनी उम्र के लड़कों की तुलना में स्थानिक अवधारणाओं में कम कुशलतापूर्ण निष्पादन करती हैं
(d) भाषिक और संगीत सम्बन्धी अधिक क्षमताएँ रखती हैं।
63. एल्बर्ट बैन्ड्यूर का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त के अनुसार निम्न में से कौन-सा सही है?
[CTET-Sept.-2014-I]